Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

संस्कृत साहित्य में श्रीराधा विषयक विविध मान्यताएं–एक अनुशीलन

डॉ0 प्रभात कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
नेहरू ग्राम भारती डीम्ड विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश,भारत।

Article Info
Volume 3 Issue 6
Page Number : 183-188
Publication Issue :
November-December-2020
Article History
Accepted : 01 Dec 2020
Published : 25 Dec 2020

सारांश–कृष्ण को आह्लाद या प्रेम प्रदान करने के कारण वह स्वयं आह्लादरूपिणी या प्रेमरूपिणी है। गौड़ीय आचार्यों ने आहलादिनी और प्रेम का सम्बन्ध अपने ग्रन्थों में स्पष्ट किये है। कृष्णदास कविराज अपने ग्रन्थ में प्रेम–तत्त्व को स्पष्ट करते हुए बताया है कि आह्लादिनी का सार प्रेम है, प्रेम का सार भाव और भाव का सार अथवा पराकाष्ठा महाभाव है। श्रीराधा महाभाव स्वरूपा है।
मुख्य शब्द– श्रीराधा, संस्कृत, साहित्य, भक्ति, कला, कृष्ण।

'भगवती श्रीराधा' संस्कृत वाङ्मय के सुरम्य सरोवर से प्रस्फुटित सर्वश्रेष्ठ कनक–कंज–कलिका है। उनके लिए कहा जाता है कि वह काव्य की अधिष्ठात्री, भक्ति की निर्झरिणी तथा कला की उत्स और प्रेम की साक्षात् प्रतिमा है। कृष्ण–वाङ्मय में भगवती श्रीराधा के सम्बन्ध में यह उल्लेख प्राप्त होता है कि वह कोई मृण्णमूर्ति नहीं है। वह तो चिन्मयविग्रहवती है। वह पार्थिव प्रतिमा नहीं अपितु पराशक्ति का प्राकट्य हैं। वहाँ परब्रह्म भगवान् श्रीकृष्ण रासेश्वर है, तो राधिका रसेश्वरी। वे नित्य रासेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण के रास की नित्य–स्वामिनी है। उस रास के नित्य स्वामिनी भगवती श्रीराधा के बिना श्रीकृष्ण का एक क्षण भी रहना सम्भव नहीं है। अतः दोनों में किसी भी प्रकार का व्यवधान या नियंत्रण सम्भव ही नहीं है।

वस्तुतः भगवती श्रीराधा, कृष्णवाङ्मय का प्राण–तत्त्व है। इसमें किसी को किसी भी प्रकार का सन्देह नहीं करना चाहिए। उसी भगवती श्रीराधा के विषय में भिन्न–भिन्न मतावलम्बियों ने अपनी–अपनी दृष्टि से उन्हें प्रस्तुत करने का सफलतम् प्रयास किया है। अतः भगवती श्रीराधा जी के सन्दर्भ में एक निश्चित अवधारणा प्रस्तुत करना एक दुरूह कार्य है। फिर भी राधा विषयक विशाल साहित्य के स्वाध्याय पश्चात् विषय

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

वस्तु की दृष्टि से प्राप्त होने वाले राधा–विषयक विविध मान्यताओं को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

श्रीराधा का स्वाकीया एवं परकीया विषयक अवधारणा :

संस्कृत साहित्य में स्वकीया शब्द से तात्पर्य 'अपने से' है अर्थात् जो विधिवत् विवाहोपरान्त जिस पुरुष का वरण करती है, उसी के प्रति समर्पित हो जाती है जबकि परकीया स्त्री, लोक एवं परलोक की उपेक्षा कर जिससे उसका विवाह भी नहीं हुआ होता है, वह अपनी आत्मा से प्रेमपूर्वक उस पुरुष के प्रति समर्पित होती है। भगवती श्रीराधा के सम्बन्ध में ये दोनों धारणाएँ परिलक्षित होती हैं।

श्रीराधा के विविध स्वरूप :

स्वरूप शब्द का प्रयोग व्यक्ति या पदार्थ की आकृति के सम्बन्ध में किया जाता है। यद्यपि स्वरूप निर्धारण का काम न्याय या दर्शन का है, फिर भी रूप विधान का क्षेत्र भक्त हृदय की अनुरक्तिमयी प्रतीति है। आवाङ्मनसागोचर भगवती श्रीराधा परब्रह्म भगवान् श्रीकृष्ण की आह्लादिनी शक्ति है। तत्त्वतः वे दोनों एक है फिर भी क्रीडावशात् उनके अनेक रूप उपलब्ध होते है जो इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–

सामान्य नारी – यद्यपि श्रीराधा का मूलस्वरूप जानना एक रहस्यात्मक विषय है फिर भी यह मान लिया जाता है कि श्रीराधा का आविर्भाव साहित्य के माध्यम से ही भौतिक जगत् में हुआ है। 12वीं शताब्दी के पूर्व के साहित्य में श्रीराधा का तात्त्विक स्वरूप धार्मिक या दार्शनिक न होकर साधारण मानवीय रूप है क्योंकि वहाँ पर आभीर स्त्रियों तथा कृष्ण की प्रेमकथाओं का वर्णन साधारण मानवीय प्रेम को ही अभिव्यंजित करता है। श्रीराधा एक आभीर नारी तथा कृष्ण प्रेयसी थी, हाँ इतना अवश्य था कि श्रीकृष्ण इनको अन्य आभीर नारियों से अधिक प्रेम करते थे। हाल ''कृत गाथा सप्तशती'' में हमें उसी राधा का दर्शन होता है।[1]

भक्ति–रूपा – 12वीं शताब्दी के बाद के साहित्य में श्रीकृष्ण को अवतार रूप में मान्यता मिल गयी थी। श्रीकृष्ण के प्रति गोपियों का निवेदन भक्ति–भावना का ही सूचक है, जो कृष्ण के प्रति आत्मसमर्पित है। भगवती श्रीराधा को अन्य गोपियों से श्रेष्ठ होने के कारण भगवान् श्रीकृष्ण का श्रेष्ठ भक्त स्वीकार किया गया है। भागवत में भी गोपियों ने अपने को कृष्णभक्त बताकर निवेदन किया है कि 'जिस प्रकार आदिपुरुष श्रीनारायण मुमुक्षुओं को ही अपनाते हैं, उसी प्रकार आप हम भक्तों को भी ग्रहण कीजिए।

प्रकृति स्वरूपा – राधा–कृष्ण के स्वरूप पर सांख्य–दर्शन का बड़ा ही प्रभावी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। सांख्यदर्शन मूलतः प्रकृति और पुरुष इन दो युग्म तत्त्वों का समवाय है। राधा एवं कृष्ण को भी प्राचीनकाल से ही प्रकृति–पुरुष माना गया है।[3] सांख्य की दृष्टि में प्रकृति क्रियाशील, भोग्य तथा त्रिगुणात्मिका है।[4] इसी आधार पर भगवती श्रीराधा को प्रकृति रूप में स्वीकार किया जा सकता है।[5] भगवती श्रीराधा ही आद्या–प्रकृ

ति नित्य, निर्विकारिणी एवं सबकी जन्मदात्री भी है।[6] वहाँ पर प्रकृति के मूलस्वरूप को प्रधान, अव्यक्त या मूलप्रकृति कहा गया है। इसमें किसी प्रकार की विकृति नहीं है।[7] ब्रह्मवैवर्तपुराण तथा राधोपनिषद् से भी भगवती श्रीराधा को मूलप्रकृति स्वीकार किया गया है।[8] पद्म पुराण में जो 8 तथा तथा 16 सखियों का उल्लेख आया है वे ही 8 तथा 16 सखियां मूलप्रकृति राधा की प्रधान प्रकृति है।[9] सांख्य दर्शन में जिस प्रकार प्रकृति तथा पुरुष दोनों सनातन है, वहाँ पुरुष, प्रकृति का भोक्ता है। उसी प्रकार राधाकृष्ण भी आदि, अनादि तथा सनातन स्वीकार किये गये हैं।

शक्ति–स्वरूप –शक्तिवाद भारतीय उपासना का एक सशक्त माध्यम है क्योंकि जगत्–सृष्टि के आरम्भ से ही शक्ति एवं शक्तिमान् की कल्पना है। वही शक्ति वैष्णव सम्प्रदाय में विष्णु के साथ, राम सम्प्रदाय में सीता के साथ तथा कृष्ण सम्प्रदाय में राधा रूप में सिद्ध है। शक्ति के विभिन्न रूप में राधा की गणना नारद–पंचरात्र में इस प्रकार है।[10] शैव सम्प्रदाय में तो उसी शक्ति को शक्तिमान् के अधीन बताया गया है जबकि शक्ति सम्प्रदाय में शक्ति को स्वतन्त्र सत्ता के रूप में स्वीकार किया गया है वहाँ वह किसी के अधीन नहीं है। देवीभागवत में तो यहाँ तक कह दिया गया है कि जिस प्रकार शक्ति के अभाव में शिव, शववत् है, उसी प्रकार बह्मवैवर्त पुराण में श्रीराधा के बिना कृष्ण भी जड़वत् है।[11] वहीं पर यह भी उल्लेख आया है कि श्रीराधा ही श्रीकृष्ण को शक्तिमान् बनाती है। उनके बिना श्रीकृष्ण सृष्टि रचना में असमर्थ है।[12] जगत्–उत्पादिका शक्ति होने से उन्हें माया, परा[13] तथा अपरा[14] शक्ति भी कहते हैं। ब्रह्मवैवर्तपुराण के कृष्णजन्मखण्ड में राधा में प्रकृतिस्वरूपा तथा ब्रह्म की जगत् उत्पादिका शक्ति एक साथ समन्वित किया गया है।[15] इन्हीं माया से सम्पूर्ण चराचर जगत् सम्मोहित रहता है।[16]

पद्म पुराण के पातालखण्ड में उन्हीं श्रीराधा को कृष्ण की आह्लादस्वरूपिणी स्वकार किया गया है।[17] वहीं पर यह भी उल्लेख है कि जिस प्रकार श्रीराधा से ब्रह्मा, विष्णु तथा शिवादि उत्पन्न हुए है, उसी प्रकार दुर्गादि समस्त देवियाँ भी उन्हीं की ही अंशभूता है।[18] यही तथ्य ब्रह्मवैवर्तपुराण के प्रकृतिखण्ड[19] में भी दिग्दर्शित है। वही श्रीराधा मूलप्रकृतिरीश्वरी, महाविष्णु की माता, सगुणा, निर्गुणा, महालक्ष्मी, सती, भारती, सावित्री, गंगा तथा तुलसी आदि हैं।

यदि हम लीलादृष्टि पर विचार करें तो भी श्रीराधा का आह्लादिनी शक्ति रूप अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्रायः सभी सम्प्रदायों में भगवती श्रीराधा को इस शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। परात्पर ब्रह्म भगवान् श्रीकृष्ण की आह्लादिनी शक्ति ही तो उनके लीला का आधार है। शायद इसीलिए राधोपनिषद् में श्रीकृष्ण की समस्त शक्तियों में आह्लादिनी शक्ति को ही सर्वश्रेष्ठ बताया गया है।[20] इसका समर्थन करते हुए जीवगोस्वामी ने भी ब्रह्मसंहिता में बताया है कि दुर्गा, महालक्ष्मी तथा राधा एक ही श्रेणी में है।[21]

प्रेमतत्त्व–स्वरूपा – मूलतः 'तत्त्व' तो एक अव्यक्त वस्तु है क्योंकि जब–तक उसका स्वरूप न हो, तब तक उसका प्रकाशन सम्भव नहीं है। सर्वत्र तत्त्व ही लीलार्थ रूप धारण करते है। क्योंकि बिना स्वरूप के लीला सम्भव नहीं है। जो प्रेमतत्त्व के वास्तविकता को जान लिया है, वह अवश्य ही आलोचना एवं तत्त्वचिन्तन से ऊपर उठ जाता है। किन्तु जो इस प्रेम–तत्त्व को नहीं समझ पाया वह राधाकृष्ण के प्रेम को लौकिक तथा सामान्य मानकर उन्हें अश्लीलता की श्रेणी में रखा। मेरे विचार से इसमें उनका दोष नहीं है क्योंकि उसने प्रेम तत्त्व को समझा ही नहीं। यद्यपि प्रेम अनिर्वाच्य तथा अविवेच्य है फिर भी उसको समझने के लिए वह वचनविवेच्य के क्षेत्र में आ जाता है।

कृष्ण को आह्लाद या प्रेम प्रदान करने के कारण वह स्वयं आह्लादरूपिणी या प्रेमरूपिणी है। गौड़ीय आचार्यों ने आहलादिनी और प्रेम का सम्बन्ध अपने ग्रन्थों में स्पष्ट किये है। कृष्णदास कविराज अपने ग्रन्थ में प्रेम–तत्त्व को स्पष्ट करते हुए बताया है कि आह्लादिनी का सार प्रेम है, प्रेम का सार भाव और भाव का सार अथवा पराकाष्ठा महाभाव है। श्रीराधा महाभाव स्वरूपा है। इसलिए कृष्णपत्नियों में सर्वश्रेष्ठ है।[22] वहीं पर महाभाव के दो भेद बताते हुए भगवती श्रीराधा को मादनाख्या महाभाव के अन्तर्गत स्वीकार किया है। यह मादनाख्या महाभाव परमोल्लास एवं परात्पर भाव है।

कुछ भी हो हमारी दृष्टि में भगवती 'श्रीराधा' एक पद नाम है, जो परात्पर ब्रह्म भगवान श्रीकृष्ण का एक प्रकाशपुंज है। प्रेम की उत्कट स्थिति ही राधा है। अतः इन्हीं को महाभावस्वरूपिणी भी कहा गया है। यह तत्त्व, मुख्यतः भक्त पर निर्भर करता है कि वह किस दृष्टि से इन्हें देखता है, क्योंकि जिस रूप में वह देखेगा वह उसे उसी रूप में दिखायी देगीं। शायद इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी कहा है कि– 'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता'। इन्हें वही जान या समझ सकता है जिस पर उनकी कृपा–दृष्टि हो। इस सन्दर्भ में भी गोस्वामी जी की एक और पंक्ति अति उल्लेखनीय हो जाती है–

'सोइ जानइ जेहि देहु जनाई। जानत तुम्हहिं तुम्हहिं होइ जाई ।।

इसलिए आज के मूढ़ एवं भ्रान्त विवेचक, आलोचक एवं समीक्षक जो की राधा के विषय में भ्रान्त अवधारणा प्रस्तुत करने का निकृष्टतम् प्रयास किया है वह बिल्कुल निराधार है यह उनकी खुद की बौद्धिक उपज है। हमें तो लगता है कि वे किसी पूर्वाग्रह की भावना से ग्रसित हैं, जो कि वे स्वान्तः सुखाय के लिए इस प्रकार दर्शाया गया है।

सन्दर्भ सूची

1. मुखमारुतेन त्वं कृष्ण गोरजो राधिकाया अपनयन्।
   एतासां बल्लवीनामन्यासामपि गौरवं हरसि ।।गाथासप्तशती 1/89
2. मैवं विभोऽर्हति भवान् गदितुं।

नृशंस संत्यज्य सर्वविषयांस्तवपादमूलम् ।।

भक्ता भजस्व दुरवग्रह मा।

त्यजास्मान् देवो यथाऽऽदिपुरुषो भजते मुमुश्रुन्।। (श्रीमदभागवत 10/29/31)

3. पुरुषः प्रकृतिश्चाद्यौ राधावृन्दावनेश्वरौ।

पद्मपुराण पातालखण्ड 77/48

4. त्रिगुणमविवेकीविषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।

व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान् ।। सांख्यकारिका 11

5. सत्त्वं तत्त्वं परतत्त्वं च तत्त्वत्र्यमहं किल ।

त्रितत्त्वरूपिणी साऽपि राधिका परदेवता।। बृहद्गोतमीय तत्र पृ0 445

6. तस्माद्या प्रकृति राधिका नित्या, निर्गुणा सर्वालंकारशोभिता।

प्रसन्नाशेष–लावण्य–सुन्दरी आस्मादादीनां जन्मदात्री।

पुरुषार्थ बोधिनी उपनिषद ।

6. मूलप्रकृतिरविकृतिर्महदाद्या प्रकृतिविकृतयः सप्त।

षोडशकस्तु विकारो न प्रकृतिर्न विकृतिः पुरुषः ।। सांख्यकारिका 3 4

7. क. वृषभानुसुता गोपी मूलप्रकृतिरीश्वरी। राधोपनिषद्

ख. सृष्टेराधारभूतत्वं बीजरूपोहमच्युतः ।

ममांगांशस्वरूपात्त्वं मूलप्रकृतिरीश्वरी ।। ब्र0वै0पु0कृ0ख0 15/61

8. क. अष्टौ प्रकृतयः पुण्पाः कृष्णवल्लभाः । पद्मपुराण पातालखण्ड 70/7

ख. षोडशाधा प्रकृतयः प्रधानायः कृष्णवल्लभाः ।। वही 70/9 6

9. लक्ष्मी सरस्वती दुर्गा सावित्री राधिकापरा।। नारदपंचरात्र 1/2 7

10. क. शिवोऽपि शवतां याति कुण्डलिन्या विवर्जितः । देवीभागवत कवच ।

ख. त्वया बिना जड़श्चाहं सर्वत्र च न शक्तिमान्

सर्वशक्तिस्वरूपा तं त्वमागच्छ ममान्तिकम्।

(ब्र०वै0पु0अ0ख0 55/87)

11. नारायणी सा परमात्मा सनातनी, शक्तिश्च पुंसःपरमात्मनश्च ।।

आत्मेश्वरश्चापि यथा च शक्तिमान् तथा बिना स्रष्टुमशक्त एव ।।?

(ब्र०वै0पु0ब्र०ख०)

12. पद्मपुराण उत्तर0 227/51

13. विष्णुपुराण 6/7/61

14. वही

15. त्वं च शक्ति स्वरूपाऽपि सर्वस्त्री–रूपधारिणी।
ममांगांशस्वरूपा त्वं मूलप्रकृतिरीश्वरी। ब्र०वै0पु00ख0 15/66

16. ब्रह्मस्वरूप प्रकृतिर्न भिन्ना यया च सृष्टिः कुरुते सनातनः
शिवश्च सर्वा कलया जगत्सु माया च सर्वे च तथा विमोहिता।
वही 30/12

17. सर्वलक्ष्मीस्वरूपासा कृष्णालादस्वरूपी।। पद्मपुराण पातालखण्ड 81/52

18. तत्कलाकोटिकोट्यंशा ब्रह्मविष्णुमहेंश्वरा।
तत्कलाकोटिकोट्यंशा दुर्गाद्यास्त्रिगुणात्मिका ।। वही 69/111–118

19. ब्रह्मवैवर्तपुराण प्रकृतिखण्ड 55/60–75 एवं हि तस्या शक्तस्त्वनेकघाः आह्लादिनी, सन्धिनी ज्ञानेच्छा क्रियाज्ञा बहुविधाः शक्तयः ।
तास्वाह्लादिनी वरीयसी परमान्तरगंभूता राधा। राघोपनिषद् 11

20. यन्नाम्ना नाम्नि दुर्गाहं गुणैगुणवती ह्यहम् ।
यद्वैभवान् महालक्ष्मी राधा–नित्या पराद्वया।
(जीवगोस्वामी कृत ब्रह्मसंहिता, टीका, पृ0 105

21. चैतन्यचरितामृतलीला 8 म०परि०।

22. सर्वभावोद्गमोल्लासी मादनाख्यो परात्परः ।
राजते हलादिनी सारो राधामामेव यः सदा।। (चैतन्यचरितामृत)